स्वामी विवेकानन्द के समानता ,स्वतन्त्रता एवं राष्ट्र सम्बन्धी विचार

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव ,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

शोध सारांश

तत्कालीन युग की सबसे बड़ी माँग राष्ट्रवाद' थी, जिसे स्वामी विवेकानन्द ने अपनी ओजस्वी वाणी में व्यक्त किया। यह 'राष्ट्रवाद कोई अमूर्त और संकीर्ण अवधारणा नहीं है। वह विश्व–बन्धुत्व से ओत–प्रोत है, जिसके मूल में भारत की सनातनता एवं सन्तानों का हित निहित हैं। इसीलिए कन्या कुमारी में अपनी समाधि से उठकर स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि "मैंने देखा है कि भारत माता ओर जगदम्बा में कोई भेद नहीं है। भारत माता की पूजा ही जगदम्बा की पूजा है। भारतमाता की सेवा का अर्थ है, भारत की सन्तान की सेवा।" शिकागो की धर्म संसद में अपने विश्व–विख्यात व्याख्यान के पश्चात प्रसिद्धि के शिखर पर अवस्थिति स्वामी विवेकानंद का मन मर्मान्तक पीड़ा से भर उठता है– 'ओह माँ! नाम और प्रसिद्धि लेकर मै क्या करूंगा, जब मेरी मातृभूमि अत्यन्त गरीब है। कौन भारत के गरीबों को उठायेगा? कौन उन्हें रोटी देगा? हे माँ मुझे रास्ता दिखाओं, मै कैसे उनकी सहायता करूँ? इस प्रकार आपका राष्ट्रवाद आमजन का अपना राष्ट्रवाद है जो स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व पर आधारित है। स्वामी विवेकानन्द स्वतन्त्रता के प्रबल पक्षधर हैं। आपके अनुसार 'स्वाधीनता ही विकास की पहली शर्त है।' लन्दन के एक व्याख्यान में आपने कहा था, 'यह विश्व क्या है? स्वतन्त्रता में इसका उदय होता है और स्वतन्त्रता पर ही यह अवलम्बित है।' यह बात उन्होंने सिंह की मांद में घुसकर ललकार के स्वर में कही थी क्योंकि ब्रिटेन उस समय सबसे बड़ा साम्राज्यवादी देश था। आपने 'चार जुलाई' शीर्षक कविता में स्वतंत्रता को पूरी दुनिया में छा जाने की मूर्त कल्पना की है। एक जीवन–मूल्य के रूप में स्वतन्त्रता की तभी सार्थकता है जब वह सामाजिक समानता पर आधारित हो।

Key Words: *स्वामी विवेकानन्द,समानता ,स्वतन्त्रता,राष्ट्र,विचार।*

स्वामी विवेकानन्द जी प्रत्येक व्यक्ति के साथ समान व्यवहार का समर्थन करते थे,लेकिन आप साम्यवादी चिन्तन की 'पूर्ण समानता' की मान्यता को असंभव मानते हैं। आपके शब्दों में '' सच्ची समानता न तो कभी रही है और न ही इस पृथवी पर कभी स्थापित हो सकती है। हम सभी लोग यहाँ एक समान कैसे हो सकते हैं? इस असंभव समानता का अर्थ है–पूर्ण मृत्यु ।'' अब प्रश्न है कि मनुष्य–मनुष्य में अन्तर क्यों है ? एक पागल व्यक्ति ही यह कह सकता है कि हम सभी समान मानसिक व्यक्ति के साथ जन्म लेते हैं।''

स्वामी विवेकानन्द का कहना है कि ''स्वतन्त्रता ही विकास की एकमात्र शर्त है।'' इसको समाप्त करने का परिणाम होगा–अधःपतन। स्वतन्त्रता व्यक्ति की आत्मानुभूति के लिए आवश्यक है। अपने 'स्व' का साक्षात्कार करना ही पूर्णता है। चूँकि समाज का निर्माण व्यक्तियों के सम्मिलन से ही होता है। अतः जो तत्व व्यक्ति के विकास व पूर्णता में लाभदायक है, वह समाज के विकास व पूर्णता के लिए भी फलप्राप्त होगा। इसलिए आप प्रत्येक व्यक्ति के लिए आह्वान करते हैं कि– ''स्वतन्त्र

बनो। एक स्वाधीन शरीर, एक स्वाधीन मस्तिष्क और एक स्वाधीन आत्मा। यही वह वस्तु है जिसका अनुभव मैंने अपने सम्पूर्ण जीवन में किया है। अधीनता में भलाई करने की अपेक्षा मैं स्वाधीनतापूर्वक बुराई करना अधिक श्रेयस्कर समझूँगा।''

कोई भी व्यक्ति, जाति या राष्ट्र केवल उस स्थिति में ही उन्नति कर सकता है जब व्यक्तियों को दो प्रकार की स्वतन्त्रताएँ प्रदान की जाएँ–विचार की स्वतन्त्रता ,कार्य की स्वतन्त्रता । स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, ''विचार व कार्य की स्वतन्त्रता ही जीवन, विकास व खुशहाली की एकमात्र शर्त है। जहाँ इसका अस्तित्व नहीं है, वहाँ व्यक्ति, प्रजाति और राष्ट्र का आवश्यक रूप से पतन होगा।'' एक राष्ट्रवादी अपने राष्ट्र की शक्ति क्षेत्र व प्रभाव का विस्तार करना चाहता है। स्वामी विवेकानन्द भी कहना था कि ''विस्तार जीवन का लक्षण है हमें बाहर जाना होगा, विस्तार करना होगा, अपने जीवन को प्रदर्शित करना होगा अथवा नीचे गिरना होगा, सड़ना होगा और मर जाना होगा। भारत को विश्व विजय करना होगा.....। यही हमारी शाश्वत विदेश नीति होनी चाहिए।'' लेकिन यह विस्तार आर्थिक या राजनीतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक होगा। सम्पूर्ण विश्व भारत के विशाल आध्यात्मिक कोष की प्रतीक्षा कर रहा है.....। हमें दुनिया के विभिन्न राष्ट्रों को अपने 'शास्त्रों के सत्य का उपदेश देना है। भारत पश्चिम को अपनी आध्यात्मिक शक्ति से पराभूत करेगा, धर्म की विजय करेगा।

सर्वकल्याण में आस्था रखने के कारण स्वामी विवेकानन्द व्यक्तिवादी नैतिकता के दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हैं। आप व्यक्ति की स्वतंत्रता के समर्थक हैं लेकिन वास्तविक स्वतंत्रता, स्वयं के स्वार्थों की पूर्ति में नहीं बल्कि दूसरों के हित के लिए अपने निजी हितों के परित्याग में अन्तर्निहित होती है। नैतिकता का कहना है कि मैं नहीं, बल्कि तुम।' इसका आदर्श वाक्य है– 'स्व' नहीं, बल्कि स्व–हीनता। इसलिए नैतिकता के नियमों के अनुसार व्यक्तिवाद के उन निरर्थक विचारों को छोड़ना आवश्यक है जिनसे व्यक्ति उस समय चिपक जाता है जब वह अन्तहीन शक्ति अथवा अनन्त ऐन्द्रिय सुख की प्राप्ति का प्रयत्न करता है। स्वामी विवेकानन्द का मानना था कि इन्द्रियाँ कहती हैं–सर्वप्रथम मैं। नैतिकता कहती है– मुझे स्वयं को सबसे अन्त में रखना चाहिए।'' सच्ची नैतिकता भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति की अवधारणा का विरोध करती है।

स्वामी विवेकानन्द और राजनीति

आधुनिक भारतीय राजनैतिक चिन्तन के इतिहास में स्वामी विवेकानन्द का महत्वपूर्ण स्थान है। स्वामी विवेकानन्द में राजनीतिज्ञता जैसी कोई बात नहीं थी। राजनीति में आपका कोई विश्वास न था और न ही आपने किन्ही राजनीतिक कार्यकलापों में कभी कोई भाग लिया । विभिन्न स्थलों पर आपने यह स्पष्ट कर दिया कि मैं न राजनीतिज्ञ हूँ न राजनीतिक आंदोलन मचाने वालों में से हूँ । मैं केवल आत्मत्व की चिन्ता करता हूँ – जब वह ठीक होगा तो सब काम अपने आप ठीक हो जाएंगे।

स्वामी विवेकानन्द के राजनैतिक विचार आपके धार्मिक एवं सामाजिक विचारों के सहगामी हैं क्योंकि आप राष्ट्रवाद का आध्यात्मीकरण करने के पक्षपाती थे। आपके विचारों, भाषणों और सम्भाषणों में जो राजनीति का दर्शन उपलब्ध होता है। वह आपको पश्चिमी राजनीतिक चिन्तकों के समकक्ष ही नही वरन् कुछ दृष्टियों से आपको उनसे भी आगे ले जाता है । विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता, समाजवाद आदि के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किये स्वामी विवेकानन्द जी व्यक्ति और राष्ट्र का आध्यत्मिक उत्थान करना चाहते थे आपका मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में

एक तत्व प्रमुख होता है जो न केवल उसके अस्तित्व को बनाये रखता है वरन उसकी प्रगति की दिशा का निर्धारण भी करता है। भारतीय सन्दर्भ में यह तत्व धर्म है। विवेकानन्द का विश्वास था कि 'भविष्य में धर्म ही भारतीय जीवन का मूल आधार ही नही, उसके नवोउत्थान का कारण भी सिद्ध होगा और कोई भी राष्ट्र अपने अतीत की अवहेलना करके महान नहीं बन सकता। भारत भी इसका अपवाद नही है। धर्म ही निरन्तर भारतीय जीवन का आधार रहा है इसलिए सभी सुधार कार्य धर्म के माध्यम से ही किये जाने चाहिए।

राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में विवेकानन्द जी की एक अन्य महत्वपूर्ण देन उनकी स्वतंत्रता की धारणा है उनका कहना था ''जीवन सुख और समृद्धि की एक मात्र शर्त चिंतन एवं कार्य में स्वतंत्रता है। जिस क्षेत्र में यह नही है उस क्षेत्र में मनुष्य जाति और राष्ट्र का पतन होगा।

विवेकानन्द ने स्वतंत्रता को मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार माना और यह इच्छा व्यक्त की कि समाज के सभी सदस्यों को यह अवसर समान रूप से प्राप्त है। आपके शब्दों में ''प्राकृतिक अधिकार का अर्थ यह है कि हमें अपने शरीर, बुद्धि और धन का प्रयोग अपनी इच्छानुसार करने दिया जाय। और हम दूसरों को कोई हानि न पहुँचाए और समाज के सभी सदस्यों को धर्म, शिक्षा तथा ज्ञान प्राप्ति का समान अधिकार हो।''

राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में एक अन्य महत्वपूर्ण देन शक्ति और निर्भयता का संदेश है। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार ''बिना शक्ति के हम अपने अस्तित्व को कायम नही रख सकते और न ही अपने अधिकारों की रक्षा करने में समर्थ हो सकते हैं। विवेकानन्द के अनुसार राष्ट्र व्यक्तियों से ही बनता है और सभी व्यक्तियों को अपने पुरूषत्व, मानव गरिमा तथा सम्मान की भावना आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास करना चाहिए। उन्हीं के शब्दों में ''आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति अपने अहम का देश और राष्ट्र की आत्मा के साथ तादात्म्य कर दे।'' पं0 जवाहर लाल नेहरू के अनुसार ''स्वामी जी राजनीति से पृथक रहे उन्हें अपने समय के राजनीतिज्ञ प्रभावित नहीं करते थे लेकिन उन्होंने आम आदमी की स्वतंत्रता तथा समानता को ऊपर उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।''

स्वयं स्वामी विवेकानन्द के हृदय में अपने राष्ट्र के प्रति कितना लगाव था ,यह उस कथन से प्रमाणित होता है जो आपने दिसम्बर, सन् 1896ई0 को लंदन छोड़ते वक्त कहा था। आपके शब्दों में, ''पाश्चात्य–भूमि मे आने से पूर्व में भारत से सिर्फ प्यार करता था, इस समय भारत का धूलिकण तक मेरे लिए पवित्र है, भारत की वायु अब मेरी दृष्टि मे पवित्रता की प्रतिमूर्ति है–भारत इस समय मेरे लिए तीर्थ जैसा है।'' आपने भारत–भूमि को 'पुण्य–भूमि' ही नहीं कहा अपितु उसे भारत माता की संज्ञा प्रदान की। आप चाहते हैं कि सब कुछ भूलकर सभी व्यक्ति देश के पुनरुत्थान के प्रति समर्पित हो जाएँ। आपके अनुसार आगामी पचास वर्षों तक हमारी महान् 'भारत माता' ही हमारा प्रधान राग (Keynote) हो। अन्य समस्त व्यर्थ के देवताओं को अपने मस्तिष्क से अदृश्य हो जाने दो, हमारा भारत, हमारा राष्ट्र केवल यही एक देवता है जो जाग रहा है..... जो सबमें व्याप्त है।.....सर्वप्रथम 'विराट* (Virat) की पूजा करो, उस विराट की जो हमारे चारों तरफ है– सभी मनुष्यों एवं जीवों की पूजा...। इन शब्दों में अपार राष्ट्र भक्ति, अनन्त देश–भक्ति को स्पष्टतः अनुभव किया जा सकता है।

धार्मिक या आध्यात्मिक राष्ट्रवाद को राष्ट्र की शक्ति का मुख्य साधन घोषित करते हुए उसके लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु स्वामी विवेकानन्द ने युवकों का आह्वान करते हुए कहा कि ''आज हमारे देश को जिन चीजों की आवश्यकता है वे हैं– लोहे की मांश पेशियां,

स्पात की तंत्रिकाएं, प्रखर संकल्प जिसका कोई प्रतिरोध न हो सके, जो अपना काम हर प्रकार से पूरा कर सके चाहे मृत्यु से साक्षात्कार ही क्यों न करना पड़े, यह है हमें जिसकी आवश्यकता है और हम तभी श्रजन कर सकते हैं, तभी सामना कर सकते हैं और तभी शक्तिशाली बन सकते हैं। जबकि हम धार्मिक एकता के आदर्श का साक्षात्कार कर लें सबकी एकता के आदर्श की अनुभूति कर लें।'' इस प्रकार राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक या धार्मिक सिद्धान्त को स्वामी विवेकानन्द के राजनीतिक चिन्तन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान माना जा सकता है।

स्वामी विवेकानन्द राज्य के निर्माण में समानता के सिद्धान्त पर बल देते हैं। आपके अनुसार आदर्श राज्य वही होगा जिसमें सभी वर्ग समान हों। अपनी इसी विचाराधारा के कारण विवेकानन्द समाजवादी कहलाये। आपने देश के सभी निवासियों के लिए 'समान अवसर के सिद्धान्त का समर्थन किया। आपने लिखा कि ''यदि प्रकृति में असमानता है तो भी सबके लिए समान अवसर होना चाहिए अथवा यदि कुछ को अधिक तथा कुछ को कम अवसर दिया जाये तो दुर्बलों को सबलों से अधिक अवसर दिया जाना चाहिए।''

संदर्भ ग्रथ सूची

- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- झा, राकेश कुमार, योजना, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2010, जनवरी 2013
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- चौबे, प्रो0 एस0पी0, आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2010
- पाण्डेय, प्रो0 रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2008
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- झा, राकेश कुमार, योजना, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2010, जनवरी 2013
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- शर्मा डॉ0 योगेंद्र,भारतीय राजनीतिक चिंतन,डा0 सी0 एल0 बघेल, अलका प्रकाशन, कानपुर 2005
- सिंह, डॉ0 ओ0 पी0,शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2012
- संह, डॉ0 कर्ण ,विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर–खीरी,2011–12